Indian J. Soc. & Pol. 05(I):2018:79-80 Special Issue **ISSN : 2348-0084(PRINT)**
UGC List No. 47956 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

श्रीमती गाँधी युग में भारत–चीन सम्बन्ध

राजेश कुमार सिंह[1a]
[a]प्रवक्ता, राजनीति शास्त्र, ग्राम समाज पी0जी0 कॉलेज जय स्थली, आजमगढ़,उ0प्र0,भारत

ABSTRACT

श्रीमती इन्दिरा गाँधी 1980 में सत्ता में वापस आयी, 18 मई 1980 को युगोस्लाविया के राष्ट्रपति टीटो के अन्तिम संस्कार में भाग लेने गये भारत और चीन के प्रधानमंत्रियों की पहली उच्चस्तरीय मुलाकात हुई। जनवरी 1980 में इन्दिरा गाँधी के पुनः सत्ता में आने के बाद से भारत–चीन सम्बन्धों में पिछले वर्षों से व्याप्त गतिरोधों को दूर करने का नये सिरे से प्रयास आरम्भ किया गया। वियतनाम पर चीनी आक्रमण के बाद से भारत–चीन सम्बन्धों में जो खाई उत्पन्न हुई उसे दूर करने के प्रति चीनी सरकार एवं नयी भारतीय सरकार ने भी अपनी उत्सुकता प्रदर्शित की। इस वार्ता के दौरान हुआंन ह्वा ने अपनी भारत यात्रा की इच्छा व्यक्त की। बाद में वेलग्रेड में मार्शल टीटो की अन्त्येष्टि के समय चेयरमैन हुँआ गुओं फेंग और इन्दिरा गाँधी के मध्य मैत्री वार्ता सम्पन्न हुई। इन प्रगतियों के आधार पर भारत ने एक अन्वेषक दल चीन भेजने का निर्णय किया जो दोनों राष्ट्रों के सम्बन्धों के विभिन्न मुद्दों एवं विवादास्पद सीमा समस्या का अध्ययन करे। इस प्रतिनिधि मण्डल ने अपनी यात्रा के दौरान उपविदेश मंत्री एवं उपप्रधानमंत्री से वार्ताएं सम्पादित की। चीनी उपप्रधानमंत्री ने भारत–चीन मैत्री सम्बन्धों के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि भारत एवं चीन की संयुक्त संख्या शान्ति एवं स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण भूमिका थी।

KEYWORDS: *भारत, चीन, विदेश नीति, श्रीमती इन्दिरा गांधी, आसियान*

इस प्रतिनिधि मण्डल की यात्रा के दौरान ही ''देहली डिफेन्स जर्नल'' को दिये गये इन्टरव्यू में चीनी उपप्रधानमंत्री देंग जिआओं पिंग ने भारत के साथ सम्बन्ध सुधार की दिशा में चीनी सरकार की प्रवृत्तियों को अभिव्यक्त करते हुए कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण बिन्दुओं का उल्लेख किया जिनके आधार पर चीनी सरकार के साथ सम्बन्ध सुधार की पहल की इच्छा रखती है।(साइनो–इण्डियन रिलेशन्स, 4 जुलाई 1980 पृ0148)

पूर्वी सेक्टर में चीन द्वारा वर्तमान नियंत्रण रेखा को स्वीकार करने की जो बात कही जाती है वह चीन की ऐसी रणनीति है जिसमें वह कुछ खोना नहीं चाहता। इस तरह पूर्वी सेक्टर में वास्तविक नियंत्रण रेखा को स्वीकार करके चीन भारत के साथ कोई आदान प्रदान नहीं करेगा। बल्कि यह उसकी विस्तारवादी महत्वाकांक्षा का ही एक अंग है।(वही पृ0150)

चीन ने जिस समझौते का प्रयास किया है, उसे संक्षिप्त रूप से 4 भागों में बाँटा जा सकता है।(वही)

1.पूर्वी सेक्टर में चीन मेकमोहन रेखा को भारत–चीन सीमा मानने के लिए तैयार है, क्योंकि चीन पहले ही मेकमोहन रेखा के दूसरी ओर है, इसलिए इस समस्या को सुलझाना कठिन न होगा।

2.दोनों देश मिलकर उत्तर प्रदेश और हिमांचल प्रदेश के कुछ हिस्सों को लेकर केन्द्रीय सेक्टर बनाने की बात पर भी विचार कर सकते हैं।

3.भारत पश्चिमी सेक्टर में चीन ''लाइन आफ कन्ट्रोल'' को स्वीकार करके अक्साई–चीन तथा अन्य भारतीय क्षेत्रों पर चीनी अधिकार को स्वीकार कर ले। चीन के अधिकार में इस समय 14000 वर्ग कि0मी0 भारतीय क्षेत्र है।

चीन ने इस बात पर जोर दिया कि क्षेत्रीय झगड़े को स्थगित करके दोनों देश सांस्कृतिक, व्यापारिक और वैज्ञानिक क्षेत्रों में अपने सम्बन्धों को सामान्य बना सकते हैं।(अमृत प्रभात, 20 जुलाई 1980) भारतीय दृष्टिकोण से पाँच महत्वपूर्ण विषय ऐसे हैं जो भारत–चीन सम्बन्धों को बेहतर बनाने की दिशा मे महत्वपूर्ण हैं। वे निम्नलिखित हैं–

1.एक दूसरे की क्षेत्रीय अखण्डता तथा प्रभुसत्ता के सम्मान करने के सिद्धान्तों को मानकर सीमा झगड़े को सुलझाने की चीनी इच्छा।

2.उत्तर–पूर्व में विद्रोहियों को दी जाने वाली सहायता के विषय में चीन का दृष्टिकोण।

3.दक्षिण एशिया में विशेष रूप से पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान के प्रति भारतीय भूमिका को लेकर चीनी दृष्टिकोण।

4.कश्मीर एंव सिक्किम जैसे भारतीय राज्यों का भारत के साथ विलय के प्रति चीनी नीति।

5.विश्व शक्तियों के साथ सम्बन्धों पर चीनी प्रतिक्रिया तथा तटस्थ आन्दोलन और अरब एशियाई देशों के प्रति चीनी दृष्टिकोण एवं पश्चिमी–पूर्वी एशिया में चीन की महत्वाकांक्षाएँ।

जब से सोवियत संघ की सेनाएं अफगानिस्तान में प्रविष्ट हुई हैं, तब से चीन–पाकिस्तान को अफगान विद्रोहियों की सहायता के लिए और अधिक सहायता दे रहा है। भारत सरकार ने 28 जून 1980 को चीन के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।(नवभारत टाइम्स 29जून 1980) सम्बन्ध सुधारने और सामान्य बनाने की दिशा में सबसे बड़ी बाधा सीमा–विवाद की है। अतः भारत अनौपचारिक रूप से अपना दृष्टिकोण बतला चुका है कि ऐसा कोई भी ''पैकेज

1: Corresponding Author

डील'' उसे स्वीकार नहीं है क्योंकि पूर्व में मेकमोहन रेखा बहुत विवादास्पद नहीं है। समस्या मुख्य रूप से अक्साई चीन की है। भारत के सीमा–विवाद को हल करने के लिए कोलम्बो प्रस्ताव लागू करने का सुझाव दिया।(वही 26 जून 1982) किन्तु यह चीन को स्वीकार नहीं हे। एक संभावना यह भी हो सकती कि भारत अक्साई चीन का वह क्षेत्र मान ले जहाँ उसने सड़क बना ली है। इसके बदले में इसी लद्दाखी क्षेत्र में अक्साई चीन के अतिरिक्त जितनी भी जमीन है सोडा, लिंगजी, तांग, चेनमोघाटी, दीयांग, लानकला तथा दूमजोर ला के आसपास के क्षेत्र भारत को वापस लौटा दे। इसी प्रकार पूर्वी क्षेत्र में चुम्बाघाटी पर भारत का प्रभावी अधिकार रहा है, उसका प्रशासन भारत को लौटा दिया जाय और मेकमोहन रेखा को चीन वैधानिक सीमा रेखा की मान्यता देवे। इस आधार पर समझौते का प्रयास किया जा सकता है।(वही 29 जून 1982)

भारत चीन सीमा विवाद का सम्मानपूर्वक हल निकालने के लिए प्रयास जारी है। दोनों देशों के प्रतिनिधियों के बीच 20 मई 1982 को समाप्त हुई वार्ता के परिणाम चमत्कारी सिद्ध हो सके। किन्तु वार्ता को असफल भी नहीं कहा सकता। दोनों ने वार्ता को भविष्य में जारी रखने के संकल्प को दुहराया है।(अमृत प्रभात, 1 जुलाई 1982) चीनी प्रतिनिधि मण्डल के नेता श्री फुहाओं ने दोनों के बीच ऐतिहासिक और परम्परागत कठिनाइयों का जिक्र करते हुए कहा कि ये ऐसे आधार हैं जो एक दूसरे को प्रेरणा दे सकते हैं। भविष्य के लिए ठोस आधार बन सकते हैं।(आज, 1 जुलाई 1982)

एशियाई खेलों के समापन समारोह के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम में अरूणांचल प्रदेश के कलाकारों को प्रतिनिधित्व दिये जाने पर चीन की सरकारी एजेन्सियों ने जिस ढंग से विषाक्त टिप्पणी प्रसारित की, उससे दोनों देशों के सम्बन्धों के सुधारने के लिए चल रहे प्रयत्नों पर आघात सा लगा है। टिप्पणी में यहाँ तक लिख दिया गया है कि भारत ने अपने ''अवैधानिक अधिग्रहण को वैधानिक'' रूप देने के लिए एशियाड के मंच का दुरूपयोग किया और इस द्विपक्षीय मसले को बहुराष्ट्रीय विषय बनाने का प्रयास किया है।(दिनमान, 19–25 दिसं01982) अरूणांचल प्रदेश की सम्प्रभुता के सम्बन्ध में चीनी समाचार एजेन्सी ने आरोप लगाया कि भारत ने अपनी दक्षिणी सीमा को एक बड़े चीनी क्षेत्र को मिलाकर 1972 में इस राज्य की स्थापना कर दी थी। इस सम्बन्ध में विदेश मंत्रालय ने एक वक्तव्य जारी किया जिसमें कहा गया कि अरूणांचल प्रदेश भारत का अविभाज्य अंग है।'' इसलिए भारत में आयोजित एशियाई खेलों के अवसर पर विभिन्न प्रदेशों की तरह इस प्रदेश की भी संस्कृति प्रस्तुत की जा रही है इस विषय पर चीन का आपत्ति उठाना अनुचित है। सही बात तो यह है कि चीन ने लगभग 14 हजार वर्गमील के भारतीय क्षेत्र पर अनाधिकृत रूप से कब्जा कर रखा है। फिर भारत की पहल पर ही सीमा सम्बन्धी वार्ता के प्रयास हो रहे हैं। इसी दृष्टि से दोनों देशों के सम्बन्धों में सामान्यीकरण के लिए किये जा रहे प्रयत्नों का ऐसी टिप्पणी से ठेस पहुँची है।

भारत ने चीन के इस रवैया पर न केवल अपना वक्तव्य दिया, वरन् डा0 कोटनीस की स्मृति में चीन में आयोजित होने वाले कार्यक्रम के लिए 11 दिसम्बर को विजिंग जा रहे भारतीय प्रतिनिधिमण्डल की यात्रा रद्द कर दी। भारत की कार्यवाही की सभी क्षेत्रों में सराहना की गयी और अरूणांचल प्रदेश के राज्यपाल श्री एच.एच. दुबे के अनुसार अरूणांचल प्रदेश के अधिवासी भारत के प्रति गहरा लगाव महसूस करते हैं और वे अपने को इसी संस्कृति का हिस्सा मानते हैं। सुदूर क्षेत्र में रहने वाले आदिवासी भी अपने मृत्यु के साथ महात्मा गाँधी शब्द का उपयोग भी करते हैं।

चीन द्वारा अरूणांचल प्रदेश पर हल्ला मचाना इसलिए भी अनुचित लगता है कि अरूणांचल प्रदेश में जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों की सरकार कार्यरत है, 1978 में वहाँ चुनाव हुए और स्थिति की समस्याओं को सुलझाने में वहीं के लोग केन्द्र सरकार के साथ सामंजस्य स्थापित करते हैं। सन् 1981 में चीन की यात्रा पर जाने वाले एक भारतीय प्रतिनिधि मण्डल में अरूणांचल विधान सभा के अध्यक्ष को प्रारम्भ में चीन ने आपत्ति की थी, लेकिन बाद में भारत द्वारा यह यात्रा रद्द करने के बाद चीन ने उनकी आगवानी करना स्वीकार कर लिया था।

दोनों पक्षों ने यह विश्वास व्यक्त किया कि 40 करोड़ के आपसी व्यापार में कई गुना वृद्धि की गुंजाइश है। भारतीय चीनी बिजली का सामान, कृषियंत्र, शक्कर, चावल निकालने की मशीन, कपड़ा मिलें, स्कूटर की मशीनरी आदि कई चीजें निर्यात कर सकता है और उससे रेशम, पारा आदि विभिन्न रसायन आयात कर सकता है। भारत अपनी उन्नति तकनीकी के कारण चीन में अनेक कारखाने लगा सकता है।

यदि भारत–चीन पर सीमा समझौता हो जाय तो निःसन्देह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और क्षेत्रीय राजनीति पर उसका गंभीर असर होगा तथा उसके व्यापक एवं दूरगामी परिणाम होंगे। यद्यपि दोनों देश यह स्वीकार करते हैं कि अन्य क्षेत्रों में सहयोग स्थापित कर लें तथा उसे और बढ़ावा देने में सीमा विवाद को बाधक नहीं बनने दिया जायेगा। यह स्पष्ट है कि भारत–चीन सीमा विवाद बड़ा पेचीदा है और इसे हल करने में समय लगेगा तथा एशिया के इन दो बड़े महारथियों को अन्य क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने का क्रम जारी रखना चाहिए।

संदर्भ

दिनमान, 19–25 दिसम्बर, 1982,

स्ट्रेटजिक एनालसिसः *सीनो–इन्डियन रिलेशन्स* 4 जुलाई 1980,

नवभारत टाइम्स, 22 मई 1981

नवभारत टाइम्स, 26 जून 1982

नवभारत टाइम्स, 29 जून 1980

अमृत प्रभात, 1 जुलाई 1982

अमृत प्रभात, 20 जुलाई 1980

आज, 1 जुलाई 1982